❋ श्रीगदाधरगौराङ्गौ जयतः ❋

श्रीनृसिंहचतुर्द्दशी

10/

श्रीहरिदासशास्त्री

सङ्गणकसंस्करणं दासाभासेन हरिपार्षददासेन कृतम्

श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् ।

प्रकाशक :-- * मुद्रक :—
श्रीहरिदासशास्त्री
श्रीगदाधरगौरहरि प्रेस,
श्रीहरिदास निवास, कालीदह, पो० वृन्दावन ।
जिला-मथुरा (उत्तर प्रदेश)

प्रकाशनतिथि :—
श्रीश्रीमच्चैतन्यदेव की श्रीवृन्दावनागमनतिथि
कार्त्तिकी पूर्णिमा ।
३०।११।८२

श्रीगौराङ्गाब्द ४९६

द्वितीयसंस्करणम्

प्रकाशन सहयोग—

❋ श्रीगदाधरगौराङ्गौ जयतः ❋

श्रीनृसिंहचतुर्दशी

श्रीवृन्दावन वास्तव्येन न्याय-वैशेषिकशास्त्र न्यायाचार्य काव्य
व्याकरणसांख्यमीमांसावेदान्ततर्कतर्कतर्कवैष्णवदर्शनतीर्थ
विद्यारत्नाद्युपाध्यलङ्कृतेन **श्रीहरिदासशास्त्रिणा**
सम्पादिता ।

सद्ग्रन्थप्रकाशकः—
श्रीगदाधरगौरहरि प्रेस, श्रीहरिदास निवास, कालीदह,
पो०—वृन्दावन, जिला—मथुरा (उत्तर प्रदेश) ।

* श्री श्री गौरगदाधरौ विजयेताम् *

पूर्वाभाषः

गौड़ीय वैष्णव धर्म में व्रत का महत्त्व सर्वाधिक है, वर्ष भर में अनिवार्यरूप से कुछ व्रत होते हैं, प्रतिमास के दोनों पक्ष की एकादशी श्रीरामनवमी, श्रीनृसिंह चतुर्दशी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्रीराधाष्टमी श्रीअद्वैत जयन्ती, श्रीनित्यानन्द जयन्ती, श्रीगौराङ्गमहाप्रभु जयन्ती, श्रीगदाधरप्रभु जयन्ती, श्रीशिव चतुर्दशी यह ३३ व्रत होते हैं।

गौड़ीय संप्रदाय में व्रत विधायक एकमात्र शास्त्र श्रीहरिभक्ति-विलास है, इस ग्रन्थ के अनुसार ही समस्त व्रत दिन निर्णीत होते हैं।

व्रतों में वेध नामक एक नियम उक्त शास्त्र में है उसके नियम से वेध को परित्याग करके ही व्रत व्यवस्था होती है, विद्धाव्रत सर्वथा ही परित्याज्य है, यह वेध दो प्रकार के हैं, एक अरुणोदय वेध, दूसरा सूर्योदय वेध, अरुणोदय वेध एकादशी तिथि के लिए है, सूर्योदय वेध, एकादशी भिन्न समस्त तिथियों में गृहीत है, दो प्रकार वेध होने के कारण यह है कि-तिथि की पूर्णता दो प्रकार है, एकादशीतरतिथियों की प्रवृत्ति सूर्योदय से होने के कारण एक सूर्योदय से अपर सूर्योदय पर्यन्त स्थित तिथिमानको पूर्ण कहा जाता है, एकादशी तिथि में अरुणोदय से लेकर अपर सूर्योदय पर्यन्त स्थित तिथिमान की ही पूर्णता है।

इस पूर्णता की सीमा में स्वल्पमात्र भी पूर्व तिथि का प्रवेश होने से वेध होताहै और इस तिथि को त्याग करके पर तिथि में व्रत होता है।

विद्धाव्रत अतिशय पापकर है, यदि कोई वैष्णव विद्धाव्रत करे तो उनकी वैष्णव संज्ञा नहीं रहेगी, श्रीसनातन गोस्वामीजी कहते हैं— "विद्धाकरण-पापस्य महाभयानकत्वमुक्तम्" अर्थात् विद्धाव्रत का पाप महाभयानक है, ह० भ० वि० टी० १२-२३२, उक्त ग्रन्थ के मूल १२।२३१ में उक्त हैं—

स्वर्गापेक्षा महादेवि तेन त्यक्ता न संशयः ।
वाञ्छितं नारकं सौख्यं विद्धं कृत्वा हरेर्दिनम् ।।
निहताः पितरस्तेन देवतानां बधः कृतः ।
दत्तं राज्यन्तु दैत्यानां कृत्वा विद्धं हरेर्दिनम् ।।
पितृभिः सहितं वैरं कृतं तैस्तु सुरैः सह ।
कारायन्ति विद्धं ये कुर्वन्ति हरिवासरम् ।।

महादेव कहते हैं—हे महादेवि ! जिन्होंने विद्धाव्रत करवाया, और जिन्होंने किया, दोनों ने ही स्वर्ग की अपेक्षा छोड़ दी, इसमें कोई संशय नहीं है, उन्होंने पितृपुरूषों का बध किया और दैत्यों को राज्य भी दे दिया है, वे पितृपुरुष तथा देवताओं के साथ बैर कर लेते हैं' ऐसे अनेकविध विद्धानिषेध वचन श्रीहरिभक्ति विलास में लिखित हैं।

श्री राधाकुण्ड के नाम से प्रकाशित ई० १९७६ के व्रत-पत्र में श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रत का, समस्त पञ्जिकाओं में विद्धा होने पर भी बलपूर्वक विद्धा दिन में विधान हुआ, यह अतिशय भ्रमपूर्ण है।

धर्म श्रद्धालु जनता का विश्वास जितना सवर्ग में है उतना शास्त्र में नहीं है यह अनुचित है, धर्म शास्त्र का ही लेख है। अतएव शास्त्र पर महत्व रखना एकान्त आवश्यक है।

आशा है प्रस्तुत लेख से विद्धाव्रत कराने की प्रवृत्ति विदूरित होगी और जनता की दृष्टि शास्त्र के प्रति निबद्ध होगी।

विनीतः

हरिदास शास्त्री

।। श्रीश्रीगदाधरगौराङ्गौ विजयेतेतमाम् ।।

श्रीनृसिंहचतुर्दशी

वदने यस्य वागीशा, लक्ष्मीर्यस्य च वक्षसि ।
यस्यास्ति मस्तके संवित्, तं नृसिंह महं भजे ।।

दैत्यदर्पहारी भक्तवत्सल श्रीप्रभु का श्रीनृसिंह नाम सर्वकाल सर्वजन समाहृत है श्रीनृसिंह नाम में भक्त वत्सलता जितनी अधिक रूप से प्रकटित हुई है इतनी अधिक कभी भी कहीं दिखने में नहीं आई,

भक्त प्रह्लाद के आनन्द वर्द्धन के लिए श्रीप्रभु एक अद्भुत रूप में आविर्भूत हुए थे, इस अद्भुत भयंकर मूर्ति में भी आपकी अपरिसीम भक्त वात्सल्य प्रकट हुआ था अवतारकाल में श्रीप्रह्लाद के प्रति श्रीनृसिंहदेव की अनुपमवात्सल्यप्रीति को देखकर समागत ब्रह्मादि देववृन्दों के हृदय द्रवित हो गये थे।

श्रीनृसिंहजी ने नाखून से ही दैत्यराज हिरण्यकशिपु का उदर विदारण करके दर्पदलन किया था, हिरण्यकशिपु का उद्घोष था—मेरे सिवाय और कौन जगदीश्वर है, श्रीप्रभु ने ही सर्वत्र सर्वदा जागरुक रहने वाली जगदीश्वर मूर्त्ति को प्रकट करके प्रमाणित कर दिया और भक्तजन मानस प्रफुल्लित हो उठा, दैत्यराज का भी दर्प चूर-चूर हो गया।

यह भयंकर दर्पिली दैत्य मूर्त्ति, मनुष्यों की अविवेकमयी मति को ही कही जाती है, जब यह मति श्री प्रभुकृत मर्यादा को लंघनकर स्वार्थान्ध हो जाती है तो उस मर्यादा लंघनकारिणी मति मण्डित व्यक्ति को भी दैत्य कहा जाता है,

मर्यादा लघनकारी व्यक्ति का भार बहुत अधिक होता, इसके भार से और उद्वेग से सब प्राणी व्याकुल हो जाते हैं, जब किसी से भी इसका शमाधान नहीं होता तो श्रीप्रभु को समाधान करना पड़ता यह शाश्वत नियम ही निम्नोक्त वाक्य में उद्घोषित है।

"यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।। (गीता)

धर्म की ग्लानि श्री प्रभु के लिए रुचिकर नहीं होती, सर्वजन हितकर ईश्वर कृत श्रृङ्खला का नाम ही धर्म है, जिससे प्राणिमात्र अपनी-अपनी उल्लासमयी परिस्थितियों में सर्वदा रह सकते हैं, जब मानव व्यक्तिगत अविवेक आदि से उस श्रृङ्खला को तोड़कर अपनी प्रतिष्ठा को उन सबों पर थोपने लगता तब प्राणिमात्र के लिए एक भयावह स्थित्ति आ जाती है, इसे धर्म ग्लानि कही जाती है।

यह अज्ञान से पनपती और सद्विवेक होने पर विनष्ट हो जाती। अतएव श्रीप्रभु भी इसे सुधारने के लिए शास्त्र तथा साधु रूप से आते हैं, यह सब विफल होने पर चरम चिकित्सा के लिए आप आते हैं।

श्रीनृसिंह अवतार उस कृत्य का ही ज्वलन्त दृष्टान्त है, नृसिंह शब्द का अर्थ भी पुरुष श्रेष्ठ है । श्रेष्ठ मानव के प्रतीक के लिए आप ज्ञान को मस्तक में विद्या को मुख में और लक्ष्मी को सदा हृदय में स्थापन करके ही आविर्भूत हुए, और नृसिंह कहलाने लगे, इस प्रकार एक महान् मानव के लिए ज्ञान विद्या, लक्ष्मी सम्पन्न होना, अर्थात् त्रिवेणी का मिलन होना अनिवार्य है,

इन सब जयन्तीयों में व्रत करने की व्यवस्था धर्मशास्त्र में है इसके विधानानुसार श्रद्धालुजन व्रताचरण भी करते हैं. किन्तु धर्मशास्त्र केवल व्रत करने की ही प्रेरणा नहीं देते, उनका उद्देश्य इस से भिन्न है, आपके मत में उपवास का अर्थ इस प्रकार है—

उपावृत्तस्य पापेभ्यो यस्तु वासो गुणैः सह
उपवासस्तु स विज्ञेयो नोपवासस्तु लङ्घनम् ।।

अर्थात् पापों से विरत होकर, सुश्रृङ्खल सदाचार आदि महद् गुणों के प्रति लालसामय जीवन-यापन में व्रती होना ही उपवास है, केवल भोजन संकोच ही व्रत नहीं है।

धर्म विधायक शास्त्र को स्मृति शास्त्र कहते हैं, इसके विधानानुसार ही आचरणीय समस्त कृत्य करने का सदाचार है, शास्त्र में इसका विधान निम्नोक्त प्रकार है।
वैष्णव स्मृति श्रीहरिभक्ति विलास २।१४।४१८ में।

वैशाखस्य चतुर्दश्यां शुक्लायां श्रीनृकेशरी।
जात स्तदस्यां तत् पूजोत्सवं कुर्वीत सव्रतम् ॥

वैशाख मास की चतुर्दशी तिथि में श्री नृसिंहदेव का आविर्भाव हुआ था, इसलिए इस तिथि में उपवास व्रत के साथ पूजोत्सव करे।

अथ श्रीनृसिंहचतुर्दशी व्रत नित्यता

वर्षे वर्षे तु कर्तव्यं मन सन्तुष्टि कारणम्।
महागुह्यमिदं श्रेष्ठं मानवै र्भव भीरुभिः ॥

किञ्च—

विज्ञाय मद्दिनं यस्तु लङ्घयेत् स तु पापभाक्।
एवं ज्ञात्वा प्रकर्त्तव्यं मद्दिने व्रतमुत्तमम् ॥
अन्यथा नरकं याति यावच्चन्द्र दिवाकरौ

यह व्रत नित्य है, भवभीरु मानवगण मेरे सन्तुष्टि के लिए प्रतिवर्ष गोपनीय व श्रेष्ठ इस व्रत का अनुष्ठान करें, जो भी व्यक्ति जानकर भी इसे लंघन करता, व्रत नहीं करता जब तक चन्द्र, सूर्य' रहेंगे तब तक वह नरक में वास करेगा। यह जानकर मेरे आविर्भाव दिन में इस उत्तम व्रत का अनुष्ठान अवश्य करें।

अथ तत्र अधिकारी निर्णयः—

सर्वेषामेव लोकानामधिकारोऽस्ति मद् व्रते।
मद्भक्तै स्तु विशेषेण प्रणेयं मत्परायणैः ॥

समस्त मानवों का इस व्रत में अधिकार है, विशेष कर मेरे शरणागत भक्त इस व्रत को आदर के साथ करें।

अथ तद् व्रतदिन निर्णयः (ह.भ.वि. २।१४।१६१)

वैशाखशुक्लपक्षे तु चतुर्दश्यां महातिथौ ।
सायं प्रह्लाद धिक्कारमसहिष्णुः परोहरिः ।।
सद्यः कटकटाशब्द-विस्मापित-सभाजनः ।
लीलया स्तम्भगर्भान्ताद्दुद्भूतः शब्दभीषणः ।।
नृहरेरवतारात्तां यत्नतः समुपोषयेत् ।
महापुण्यतमायाश्च सायं विष्णुं प्रपूजयेत् ।।

वैशाख शुक्ल चतुर्दशी महातिथि में भक्त प्रह्लाद के क्लेश से उद्विग्न होकर सायंकाल में सभाजन को विस्मापित करके स्तम्भ से परमहरि भीषण शब्द के साथ आविर्भूत हुए थे ।

इसलिए महापुण्यतमा इस तिथि की आराधना करें और सायंकाल में श्रीविष्णु का पूजन करें ।

वृहन्नारसिंहपुराण में कथित है—

स्वाती नक्षत्र योगेतुशनिवारे हि मद् व्रतम् —
सिद्धिः योगस्य योगे च लभ्यते दैवयोगतः ।
सर्वैरेतैस्तु संयुक्तं हत्याकोटि विनाशनम् ।।
केवलश्च प्रकर्त्तव्यं मद् दिनं फल काङ् क्षिभिः ।
वैष्णवै र्नतु कर्त्तव्या स्मर विद्धा चतुर्दशी ।।

दैव से यदि स्वाती नक्षत्र शनिवार में मेरी चतुर्दशी में व्रत हो तो यह व्रत समस्त पापों का नाशक है, यह व्रत सब लोग करें ।

फलाभिलाषी व्यक्ति उक्तयोग न होने पर भी इस दिन व्रत करें, किन्तु वैष्णवगण भी स्मर त्रयोदशीविद्धा चतुर्दशी न करें।

प्रिया चतुर्दशी भौमे कर्त्तव्या किल्वषापहा ।
काम विद्धा न कर्त्तव्या स्वातीभौम युता यदि ।।

पापनाशिनी चतुर्दशी मंगलवार में हो तो अवश्य इसदिन व्रत

करें, किन्तु स्वाती भौमयुक्ता होने पर भी त्रयोदशी विद्धा चतुर्दशी में व्रत करना उचित नहीं है।

श्रीहरि भक्ति विलास, पुरीदास संस्करण, पृ०नं० ४६६में विद्धा व्रत वर्जन का एक प्रकरण है, उसका विवरण इस प्रकार है, शास्त्र में विद्धाव्रत का भी विधान है ? इसके उत्तर में लिखते हैं—विद्धाव्रत वैष्णवेतर के लिए है, वैष्णवेतर—शब्द से शैव, शाक्त सौर आदि को जानना होगा।

"अवैष्णवाः—वैष्णवेतराः, शैव सौरादयः, तत् परं तत् विषयकं, सर्वत्रैकादशी, रामनवमी, नृसिंह—चतुर्दश्यादौ वैष्णवानां विद्धा वर्जनात् ॥"

अर्थात् शास्त्र में जहाँ-जहाँ विद्धाव्रत पालन करने का विधान देखने में आता है वे सब ही वैष्णवेतर स्मार्त्तों के लिए है, सर्वत्र एकादशी, रामनवमी नृसिंह चतुर्दशी आदि सभी व्रतों में वैष्णवों केलिए विद्धा अवश्य वर्जनीय है इस प्रकरण में आपने और भी लिखा है।

इस ग्रन्थ की व्यवस्था प्रकरण को मैंने केवल अपर ग्रन्थों के लेखों को देखकर ही नहीं लिखा किन्तु प्राचीन श्रीवैष्णवों के आचरण तथा उनके पद्धति ग्रन्थों को देखकर ही लिखा है।"

"न केवलं ततत् पद्धतिग्रन्थ दृष्ट्वा लिखिता, किन्तुसतां-आचारतः सतां शास्त्रानुवर्त्तिनां वैष्णवानां-आचारतः, आचारं दृष्ट्वा निर्णीतेत्यन्वयः"।

"न केवलं ततत् पद्धतिग्रन्थ दृष्ट्वा लिखिता, किन्तु सतां आचारतश्चेति, मध्यदेशीयानां विद्धावर्जन नियमेन प्रायः परदिने व्रताचरणात्। एवं श्रीवैष्णववर्ग सम्मतैवात्र ग्रन्थेव्यवस्था लिख्यते नतु वैष्णवेतरस्मृति ररजनकल्पितेति भावः"

केवल पद्धति ग्रन्थों को देखकर ही मैंने इस ग्रन्थ को नहीं लिखा, किन्तु शास्त्रानुसार आचरण परायण सज्जनों के आचरण को देखकर ही लिखा है, मध्यदेशीय सज्जनवर्ग नियमित रूप से विद्धा को वर्जन

करते हैं और इसलिए पूर्व विद्धा को वर्जन करके प्राय: पर दिन में ही व्रताचरण करते हैं, इस प्रकारश्रीवैष्णववर्ग सम्मत ही व्रत व्यवस्था इस ग्रन्थ मे लिखी गई है, वैष्णवेतर स्मृति विधान को देख-कर जो लोक केवल कल्पना प्रवणता से व्रत विधान देते हैं उनके आदर्श से प्रेरित होकर इस प्रकरण को नहीं लिखा।

श्रीनारायणभट्टजी कृत साधन दीपिका ग्रन्थ में उक्त श्रीनृसिंह चतुर्दशी का विवरण श्रीहरिभक्ति विलास ग्रन्थ व्यवस्था के अनुरूप ही है, साधनदीपिका ग्रन्थ श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामि लिखित श्रीहरि-भक्ति विलास ग्रन्थ का संक्षिप्त प्रतिरूप है, साधन दीपिका का उपक्रम वाक्य में श्रीभट्टजी ने भी कहा है—

सदाचाराविरोधेन मन्त्रशास्त्रानुसारतः।
साधनस्य हि भावस्य दीपिकेयं प्रतन्यते ॥

मन्त्र शास्त्रों के अनुसार, सद् आचार्यों के सदाचार-अविरोध को साधनों के भावों को प्रकाशित करने वाली यह साधन दीपिका लिखी जा रही है। आप लिखते हैं—

अथ नृसिंह चतुर्दशी

विज्ञाय मद्दिनं यस्तु लङ्घयेत् सतु पापभाक्।
एवं ज्ञात्वा प्रकर्त्तव्यं मद्दिने व्रतमुत्तमम्।
अन्यथा नरकं याति यावच्चन्द्र दिवाकरौ ॥

सर्वेषामेव लोकानामधिकारोऽस्ति मद्व्रते।
मद् भक्तैस्तु विशेषेण प्रणेयं मत् परायणैः ॥

वृहन्नारसिंहे—

वैशाखशुक्लपक्षस्य चतुर्दश्यां समाचरेत्।
मज्जन्मसम्भवं पुण्यं व्रतं पाप प्रणाशनम् ॥

किञ्च—स्वाति-नक्षत्र योगेतु शनिवारे च मद्व्रतम्।

केवलं च प्रकर्त्तव्यं मद्दिनं फल कांक्षिभिः।
वैष्णवैस्तु न कर्त्तव्या स्मर विद्धा चतुर्दशी ।।

तत्र प्रकारः—प्रातः स्नानादिकं कृत्वा मन्दिरसंस्कारं कृत्वा वैष्णवानाहूय मध्याह्न समये श्रीहरेर्जन्म सम्भाव्य पंचामृत स्नानादि महानैवेदय कारयेत्। —बाबा कृष्णदास सं० पृ० सं० २३४

श्रीनृसिंह चतुर्दशी

जो जन मेरा आविर्भाव दिन को जानकर लंघन करता, वह पापी है, ऐसे जानकर मेरे दिन में उक्त उत्तम व्रत का अनुष्ठान करें, नहीं तो जब तक चन्द्र सूर्य रहेंगे, तब तक उसव्यक्ति का नरक वास होगा।

इस व्रत में सब लोकों का अधिकार है, विशेष रूप से मत् परायण व्यक्ति भक्तगण इस व्रत को अवश्य करें।

वृहन्नारसिंह पुराण में भी कथित है।

वैशाख शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी में मेरा जन्म से प्राप्त पापनाशक इस पुण्य व्रत का अनुष्ठान करें।

और भी उक्त है स्वाती नक्षत्र के संयोग, तथा उसदिन शनिवार होने से फलाभिलाषी व्यक्ति अवश्य इसदिन में व्रत करें, किन्तु त्रयोदशी विद्धा चतुर्दशी में वैष्णवजन व्रत न करें।

व्रत का प्रकार इस प्रकार है— प्रातःकाल में स्नान पूर्वक श्रीमन्दिर संस्कार करें और वैष्णवों को बुलाकर मध्याह्न समय में श्रीहरि जन्म की भावना करे, पञ्चामृत के द्वारा श्रीहरि को स्नान करावें, और महानैवेद्य भी अर्पण करें।

श्रीचैतन्य चरितामृत मध्यलीला २४ परिच्छेद में श्री सनातन गोस्वामि के प्रति वैष्णव स्मृति ग्रन्थ प्रस्तुत करने के लिए श्रीमन् महाप्रभु का आदेश, तथा सूत्र विवरण विस्तृत रूप से लिखित है उसका संक्षिप्त विवरण निम्नोक्त प्रकार है—

पुन सनातन कहे जुड़ि दुई करे।
प्रभु आज्ञादिले वैष्णव स्मृति करि बारे ।।

मुञि नीच जाति किछु न जानि आचार।
मो हैते कैंछे हय स्मृति परचार॥
सूत्र करि दिशा यदि कर उपदेश।
आपने करह यदि हृदये प्रवेश॥
तवे तार दिशा स्फुरे मो नीचेर हृदये।
ईश्वर तुमि ये कराह सेइ सिद्ध हये॥
प्रभु कहेः—ये करिते करिबे तुमि मन।
कृष्ण सेइ सेइ तोमा कराबे स्फुरण॥
तथापि सूत्र रूप शुन दिग् दरशन।
सर्वकारण लिखि आदौ गुरु आश्रयण॥
गुरु लक्षण शिष्य लक्षण, दोंहार परीक्षण।
सेव्य भगवान् सब मन्त्र विचारण॥
मन्त्र, अधिकारी, मन्त्र सिद्धादि शोधन।
दीक्षा प्रातः स्मृति कृत्य शौच आचमन॥

दन्त धावन, स्नान, सन्ध्यादि वन्दन।
गुरुसेवा, ऊर्द्ध पुण्ड्र, चक्रादि धारण॥

गोपीचन्दन, माल्य धृति, तुलसी आहरण।
वस्त्र, पीठ, गृह, संस्कार, कृष्ण प्रबोधन॥

पञ्च, षोड़श; पञ्चाशत उपचारे अर्चन॥
पञ्चकाल पूजा, आरति, कृष्णेर भोजन शयन।

श्रीमूर्त्ति लक्षण शालग्रामेर लक्षण॥
कृष्ण क्षेत्रे यात्रा, कृष्ण मूर्त्ति दरशन।

नाम महिमा नामापराध दूरे वर्जन॥
वैष्णव लक्षण, सेवापराध खण्डन।

शङ्ख जल, गन्ध पुष्प, धूपादिलक्षण।
जप, स्तुति, परिक्रमा, दण्डवत् वन्दन॥

पुरश्चरण विधि, कृष्ण प्रसाद भोजन।
अनिवेदित त्याग, वैष्णवनिन्दादि वर्जन ।।
साधु लक्षण, साधुसङ्ग, साधुर सेवन।
असत् सङ्ग, त्याग, श्रीभागवत श्रवण ।।
दिनकृत्य पक्षकृत्य, एकादश्यादि विवरण।
मासकृत्य, जन्माष्टम्यादि विधि विचारण ।।
एकादशी, जन्माष्टमी, वामनद्वादशी।
श्रीरामनवमी, आर नृसिंह चतुर्दशी ।।
एई सभेर विद्धा त्याग अविद्धाकरण।
अकरणे दोष, कैले भक्तिर लम्भन ।।
सर्वत्र प्रमाण दिवे पुराण वचन।
श्रीमूर्त्ति, विष्णु मन्दिर करण लक्षण ।।
सामान्य सदाचार, और वैष्णव आचार।
कर्त्तव्या कर्त्तव्य सब स्मार्त्त व्यवहार ।।
एइ तो संक्षेपे कैल दिग् दरशन।
जबे तुमि लिख कृष्ण करावेन स्फुरण ।।

श्रीराधागोविन्दनाथ कृत बङ्ग संस्करण, एवं श्रीश्यामलाल हकीमजी कृत हिन्दी संस्करण की व्याख्या को इस प्रकरण में देखना एकान्त आवश्यक है। आवश्यकीय अश विशेष संक्षेप में लिखित हो रहा है।

श्रीचैतन्यचरितामृत की गौर कृपा तरङ्गिणी टीका

त्रयोदशी संयुक्ता चतुर्दशी में उपवास न करें।

"वैष्णवै नंतु कर्त्तव्या स्मर विद्धा चतुर्दशी।

वैष्णवगणों को त्रयोदशी विद्धा चतुर्दशी करना कर्त्तव्य नहीं है, त्रयोदशी विद्धा चतुर्दशी यदि स्वाति नक्षत्र युक्ता

भी हो तथापि उसदिन व्रत न करें।

"काम विद्धा न कर्त्तव्या स्वाती भौम युता यदि।

मङ्गलवार तथा स्वाती नक्षत्र युक्त होने पर भी यदि वह चतुर्दशी त्रयोदशीविद्धा हो तो वैष्णव को इस दिवस में व्रत करना उचित नहीं है। (ह० भ० वि० १४।१४८) "एइ सभेर विद्धात्याग" इत्यादि की चै० च० मृ० टीका)

श्रीएकादशी, जन्माष्टमी, वामन द्वादशी, रामनवमी, नृसिंह चतुर्दशी, प्रभृति वैष्णव व्रत समूह में पूर्व विद्धा को छोड़कर ही उपवास करें, ये सब व्रत पालन उक्त प्रकार करने से भक्ति की पुष्टि होती है, पालन न करने से भक्ति नष्ट होती है। अनेक दोषों का संचार भी होता है,

श्रीहरिभक्ति विलास की 'श्रीपुरीदास संस्करण, पृ० सं० ४९५, टीका में लिखित है—

एकादशीतराशेष तिथिनां रव्युदयतः प्रवृत्तानामेव सम्पूर्णत्वेन अरुणोदय वेधासिद्धेः। तच्च पूर्वं सम्पूर्णा लक्षणे लिखितमेव।

अर्थात् एकादशी भिन्न तिथि समूह, एक सूर्योदय से लेकर द्वितीय सूर्योदय पर्यन्त रहने से पूर्णा होते हैं, और एकादशी तिथि, एक अरुणोदय से आरम्भ होकर द्वितीय सूर्योदय पर्यन्त रहने से पूर्णा होती है, अतः पूर्णा लक्षण से ही विद्धा का लक्षण सुस्पष्ट होता है। अर्थात् अरुणोदय काल में दशमी तिथि का स्वल्पमात्र प्रवेश होने पर वह एकादशी दशमी विद्धा होगी, ऐसे प्रतिपद प्रभृति तिथि में भी एक सूर्योदय काल में अपर तिथि का प्रवेश होने से विद्धा होती है।

अथ सम्पूर्णा लक्षणेन विद्धा लक्षणम्। हरि. भ० वि० पुरीदास, सं० पृ० सं० ३९८।

स्कान्दे—**प्रतिपत् प्रभृतयः सर्वा उदयादुदयाद्रवेः।**
सम्पूर्णा इति विख्याता हरिवासर वर्जिताः॥

एवं सर्वथा विद्धा परित्याज्येति निश्चितम् तत्रापेक्षितम् विद्धा लक्षणं सम्पूर्णा लक्षण भिन्नत्वेन लिखति— प्रतिपदिति—त्रिभिः रवेः—उदयात्, एक उदयमारभ्य, आ उदयावधि यदि स्यु स्तदा सम्पूर्ण इत्यर्थः। हरिवासरः- एकादशी तद् वर्जिता, स, च, नैतादृशः, किन्तु उदयात् पूर्वं मुहूर्त्तद्वयं यद्यसौ भवति तदैव सम्पूर्णा स्यादित्यर्थः।

श्रीनारायणभट्ट कृत साधन दीपिका 'पृ० सं०२६१-२, बाबा कृष्णदास संस्करण में समस्त तिथियों मे विद्धात्याग का लेख श्रीहरिभक्ति विलासोक्त सिद्धान्त के अनुरूप है, उसका दिग्दर्शन निम्नोक्त प्रकार है।

माधव्या विष्णु धर्मोत्तरे-

एकादशी दशमी षष्ठी द्वितीया च चतुर्दशी।
अमावस्या तृतीया च नोपास्या च तृतीयान्विता॥

श्रीभट्टजी ने विष्णु धर्मोत्तर का प्रमाण देते हुए कहा एकादशी, अष्टमी, षष्ठी, द्वितीया, चतुर्दशी, अमावस्या और तृतीया, इन सभी स्थलों में पूर्व विद्धा होने पर कभी भी उपवास न करें। इसके आगे और भी कहते हैं-

माधव्या अग्नि पुराणे-

नाग विद्धा तु या षष्ठी सप्तम्या तु यदाष्टमी।
भूत विद्धा अमावास्या न ग्राह्या मुनिपुंगवैरिति॥

यद्वा यदद्यपि साक्षाद्वैष्णवावैष्णवव्यवस्था नास्ति, तथापि अर्थतो वैष्णव व्यवस्था ज्ञातव्या,तथाहि रोहिणी सम्बन्धे पारण निषेध वाकचेन- अर्थतः पूर्व विद्धैवायाति, अथ च सप्तमी विद्धा त्याग पूर्वक नवमी शुद्धस्वीकारेण सप्तमी विद्धा निषिद्धैवायातीति- गत्यन्तराभावादर्थतो वैष्णवावैष्णव-व्यवस्थया पर्यवस्यतीति केचिदलमति विस्तरेण।"

विद्धा त्याग के विषय में जहाँ पर सुस्पष्ट रूप से यद्यपि वह

वैष्णव केलिए और यह वैष्णवेतर के लिए है, ऐसा कथन सुस्पष्ट रूप से नहीं है, तथापि यह वैष्णव के लिए है, अर्थ द्वारा ही समझना होगा, जैसा कि रोहिणी सम्बन्ध में पारण-अनिषेध वाक्य से अर्थ द्वारा पूर्वाविद्धा आ जाती है, और सप्तमी विद्धा त्याग पूर्वक नवमी शुद्धास्वीकार से सप्तमी विद्धा का निषेध होता है, वैसे कथन परिपाटी से अर्थ द्वारा वैष्णव-अवैष्णवव्यवस्था पर्यवसित होती है।

इस प्रकार पूर्व विद्धा व्रत वैष्णवेतर,शैव,शाक्त, सौर आदि का है,और पूर्व विद्धा शून्य व्रत ही वैष्णवों के लिए है, यह व्यवस्था सार्वदेशिकी है, और समस्त स्मृति निबन्धकारों ने भी लिखा है, इसमें दो मत नहीं है। अतएव जहाँ वैष्णव शब्द का उल्लेख नहीं है, वहाँ पर वैष्णवों के लिए विद्धा निषेध है ऐसा मानना आवश्यक होगा,और जहाँ पर विद्धाव्रत विधान में वैष्णव शब्द आता है, वहाँ भी वैष्णवेतर के लिए है, यह समझना आवश्यक होगा। यह स्मृति शास्त्रकारों की परिभाषा है, क्योंकि पृथक पृथक सिद्धान्त को लक्ष्य करके ही वैष्णव व वैष्णवेतर की व्रत-कर्त्तव्य व्यवस्थाकी जाती है। यह सिद्धान्त वेध के आधार पर ही निश्चित होता है, जैसे अरुणोदय वेध, सूर्योदय वेध, इन वेधों का विभाग भिन्न-भिन्न होने के कारण स्वीकृत भिन्न-भिन्न वेध से ही वैष्णव तथा वैष्णवेतर सम्प्रदाय भिन्न भिन्न होते हैं, अतएव वेध, धर्म समाज में सर्वाधिक गुरुत्व पूर्ण विषय है।

श्रीनारायणभट्टजी कृत श्रीव्रजोत्सव चन्द्रिका नामक एक ग्रन्थ है, इसमें प्राय सभी तिथियों की अनुष्ठान व्यवस्था पूर्व विद्धा में ही है, और साधन दीपिका तथा धार्मिक सम्प्रदाय की दृष्टि से इस ग्रन्थ का लेख पूर्णतया विरुद्ध है, क्योंकि एक व्यक्ति के लिए, एक ही धर्म सम्प्रदाय के लिए सम्पूर्ण विरोधी व्यवस्था लिखना असम्भव तथा व्यर्थ भी है, और स्वस्थ मस्तिष्क व्यक्ति के लिए तो कहना ही क्या है? इसलिए भौलिक वेध-भेद स्वीकार के आधार पर जब सम्प्रदाय विभिन्न होते हैं, तब विरुद्ध स्थल में श्रीभट्टजी के कथनानुसार विद्धा

व्यवस्था वैष्णवेतर के लिए,और अविद्धा व्यवस्था वैष्णव के लिए, जानना आवश्यक है।

वस्तुत यह ग्रन्थ संशोधन के लिए मेरे समीप में अनेक दिनों तक था, आदर्श पाण्डु लिपि के अभाव से सन्तोषजनक संशोधन नहीं हुआ, और बाबा कृष्णदासजी के आग्रह से यह छप गया।

व्रत्त सम्बन्ध में किसी भी प्रकार व्यवस्था देना अत्यन्त दायित्व पूर्ण कार्य है। वह दायित्व साधारण दायित्व नहीं हैं, अनेकानेक व्रत निष्ठ धार्मिक वैष्णव स्वयं शास्त्र विचार न करके ही विश्वस्त व्रत पत्र व्यवस्था में निर्भर करते हैं, जिस व्रत पत्र व्यवस्था के प्रति निष्ठावान् धार्मिक व्यक्ति निश्चिन्त रूप से आस्था स्थापन करके व्रतानुष्ठान करते हैं, वह व्रत पत्र व्यवस्था भ्रान्त होने से, भ्रम जनित व्रत नाश का पूर्ण दायित्व व्रत्त व्यवस्थापक के उपर ही आता है, ऐसे भ्रम के कारण व्रत व्यवस्थापक का मानव जीवन पापों से परिपूर्ण हो जाता है। सुतरां व्रत्त व्यवस्था अत्यन्त गुरुत्व पूर्ण वस्तु है।

धर्म जगत् में सदाचार एक प्रमुख स्थान रखता है, श्रुति, स्मृति, सदाचार, यह तीनों को प्रमाण रूप से माना जाता है, इन तीनों में से सदाचार का ही प्राधान्य है, सत् वे होते हैं, जिन्होंने शास्त्रों को सद्गुरु से उत्तम रूप से अध्ययन किया, अर्थ का अनुभव किया, और श्रद्धा के साथ अध्ययनानुरूप आचरण में भी व्रती है, ऐसे सन्तों के आचरण से श्रुति स्मृति प्रतिपादित विषयों का प्रामाण्य प्रतिपादित होता है। इसलिए शास्त्रों में लिखी हुई बातों से भी सदाचार का महत्व अधिक है, सदाचार को देखकर शास्त्र का विधान स्थिर सिद्धान्त पर पहुँचता है।

श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रत विषय में सदाचार भी
निम्नोक्त रूप है।

शकाब्दा १८७६, सन् १३६४ साल, ईसवीय सन् १६५०,
सम्वत् २०१४' श्रीचैतन्याब्द ४७२,

वैशाख शुक्लपक्ष	प्रारम्भ
१५ चन्द्र, १३ मई	रा०घं० २–१४
श्रीराधारमण जयन्ती,	मोक्ष-,, ,, ५-४७ पर,
महाभिषेक, पूर्णिमा व्रत,	यह निर्णय श्रीराधारमण
श्रीनृसिंह जयन्ती	मन्दिर से प्रकाशित, व्रतोत्सव
सन्ध्या समय	निर्णय पत्र के अनुसारहै।
ख ग्रास चन्द्रग्रहण	पत्र का परिचय निम्नोक्त प्रकार है।

॥ श्रीराधारमणो जयति ॥

जयगौर

व्रतोत्सव निर्णय

अथ कलियुग पावनावतार भगवच्छ्री कृष्णचैतन्य चन्द्र चरणानुचर श्रीमद् गोपालभट्ट गोस्वामि विरचित श्रीमद्धरिभक्ति विलास वैष्णव स्मृति सम्मतम् ।

पञ्चषष्टितमम् पत्रम्

चै० ४७२, वि० २०१४, शा १८७९, ई० १९५७

श्रीमद् गोपालभट्ट गोस्वामिपाद परिकर श्रीमन्माध्वगौड़ेश्वराचार्य गोस्वामि वृन्दानुमोदितम् ।

तिथि निर्णय स्तूत्तर प्रदेशीय राजशासनायत्त श्रीमद् वापूदेव शास्त्रि प्रवर्तित पञ्चाङ्गानुसारेण कृतः ।

श्रीवृन्दावन धामतः प्रकाशितम् ॥

सुसिद्धान्त पञ्जिका के अनुसार भी उक्तरूप निर्णय है । ३० वैशाख १३मई सोमवार चतुर्दशी दं१-९-५०, प्रात: घं०५-२९ परे पूर्णिमा दं ५७-३७ रा० घं४।४ गोस्वामिमते श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रत ।

३० वैशाख सोमवार १३ मई, पूर्णग्रास चन्द्रग्रहण ।

चूड़ामणि योग

ग्रहण स्पर्श	रा०घं २-१४-५०
पूर्ण ग्रासारम्भ	,, ३-२१-३१
ग्रहण मध्य	,, ४-५४
पूर्ण ग्रासान्त	,, ४-४०
ग्रहण मोक्ष	प्रात:घं५-४६
पूर्ण ग्रास ग्रहण स्थिति	,, १-१८

वृन्दावनस्थ मानव चैतन्य शिक्षा समिति से प्रकाशित व्रत पत्र का निर्णय भी उक्तानुरूप है ।

खृ० १९७६ शा० १८९८ सं२०३३

१५ गुरु० + ३ मई पूर्णिमा दं ४९।४७ श्रीनृसिह जयन्ती व्रत, चन्द्र ग्रहण १३मई

ग्रहण स्पर्श रा० १२-४६

,, मोक्ष ,, २-३

श्रीगौड़ेश्वर वैष्णव सम्मिलनी द्वारा प्रकाशित व्रतोत्सव निर्णय पत्र, षड् विंशतितम वर्ष।

ई० १९६६ सं २०२३ स० १३७३

वैशाख शुक्ल पक्ष

१३ भौम ३ मई दं ४।२० के वाद चतुर्दशी दं ५३-५ श्रीमाधवदास बाबा(पुछरी) महो०

१५बुध ४मई दं ५१।३५ श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रत,

सन् १३५८ई० १९५१ (विशुद्ध सिद्धांन्त में)

१९ मई शनि० त्रयोदशी दं ३२।४० स्मार्त्तों के लिए श्रीनृसिंह जयन्ती।

२० मई रवि० चतुर्दशी दं २४।४२ गोस्वामी मते श्रीनृसिंह जयन्ती।

सन् १३७३ ई० १९६६

१९ वैशाख ३ मई भौम० त्रयोदशी दं २।२४ परे चतुर्दशी नृसिंहचतुर्दशी। त्रयोदशी विद्धा हेतु गोस्वामी मते पराहे।

२० ,, ४ ,, बुध० गोस्वामी मते श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रत।

सन् १३७४ ई० १९६७ शा, १८८९

७ज्येष्ठ २२ मई सोम० त्रयोदशी दं३।२८ स्मार्त्त मते श्रीनृसिंह चतुर्दशी।

८ ,, २३ ,, भौम० श्रीनृसिंह चतुर्दशी त्रयोदशी विद्धाहेतु गोस्वामी मते।

शक, १८८६ सन् १३७१ ई० १९६४

१० ,, २४ ,, त्रयोदशी दं १३।४२ श्रीनृसिंह चतुर्दशी गोस्वामी मते पराहे

११ ,, २५ ,, गोस्वामीमते श्रीनृसिंह जयन्ती

शक १८८२, सन् १३६७,सं२०१७

२६ वैशाख ९मई सोम० त्रयोदशी,स्मार्त्त मते श्रीनृसिंह चतुर्दशी
२७ ,, १० ,, मंगल० श्रीहरिभक्ति विलासमते श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रत।

सन् १३७७ शक १८९२ ई० १९७०

५ ज्येष्ठ मंगल० १९ मई त्रयोदशी १३।५३ स्मार्त्तमते श्रीनृसिंह चतुर्दशी
६ ,, बुध० २० ,, गोस्वामी मते श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रत

इस प्रसंग में श्रीराधाकुण्ड स्थित श्रीगौड़ेश्वर वैष्णव सम्मिलनी से प्रकाशित श्रीवैष्णव ब्रतोत्सव निर्णयपत्र षट् त्रिशंद्, वर्ष वङ्गाद्ध १३८३ई० १९७६, के प्रतिदृष्टि देना विशेष कर्त्तव्य है।

इस पत्र में २९वैशाख १२ मईबुधवार श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रत लिखित है, अन्तिम पृष्ठ १५ में विद्धा होने पर भी श्रीप्रह्लाद संहिता मते श्रीनृसिंह चतुर्दशी व्रत होगा, यह लिखा गया है।

इस विधान का समर्थक रूप में पत्र के मुख पृष्ठ पर श्रीमद्रूप सनातन—गोपालभट्ट—रघुनाथभट्ट—रघुनाथदास-श्रीजीवगोस्वामी "चरणानुमत" वैष्णव स्मृति-

श्रीहरिभक्तिविलासादि सम्मत श्रीवैष्णव व्रतोत्सव पत्र लिखा गया है। उपरोक्त लेख में बिचारणीय बातें निम्नोक्त प्रकार हैं।

१—प्रह्लाद संहिता मते-

२—विद्धा होने पर भी व्रत होगा।

३—श्रीमद् रूप, सनातन, गोपालभट्ट, रघुनाथभट्ट रघुनाथदास, श्रीजीव गोस्वामी चरणानुमत वैष्णव स्मृति।

४—श्री श्रीहरिभक्ति विलासादि सम्मत-

प्रथम-प्रह्लाद संहिता मते -यह प्रह्लाद संहिता मुद्रित ग्रन्थ है। अथवा अमुद्रित, उपलब्ध अथवा अनुपलब्ध है, इसके विषय में अवगत होना असम्भव ही है, क्योंकि पत्र में इस ग्रन्थ का नाम ग्रन्थ देखकर नहीं लिखा गया है, किसी ग्रन्थ का लेख को देखकर ही

लिखा गया है, अतएव "अमुक ग्रन्थ में उद्धृत" संहिता के पहले लिखना ही उचित था।
श्रीहरिभक्ति विलास, साधन दीपिका, अष्टाविंशतितत्त्व, प्रभृति स्मृति ग्रन्थों में प्रह्लाद संहिता का उल्लेख बहुबार ही हुआ है, किन्तु उससे यह संहिता पृथक् है, अन्यथा वैष्णव, वैष्णवेतर साधारणजनों के लिए स्मृतिकर्ता सुप्रसिद्ध स्मृति ग्रन्थकार स्मार्त्त श्रीरघुनन्दनभट्टाचार्य जी इसे अवश्य जानते किन्तु आपके ग्रन्थ में इस वचन का उल्लेख नहीं है।

श्रीहरिभक्ति विलास वैष्णव स्मृति ग्रन्थ श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी तथा उक्त स्मृति ग्रन्थ के टीकाकार श्रीसनातन गोस्वामीजी प्रह्लाद संहिता का उक्त वचन को नहीं जानते थे, श्रीनारायणभट्टजी के लिए भी उक्त वचन अविदित था, अन्यथा साधन दीपिका ग्रन्थ लिखन के समय श्रीनृसिंह चतुर्दशी प्रकरण में इसे अवश्य लिखते।

वस्तुतः यह अंश व्रतोत्सव चन्द्रिका ग्रन्थ का है, विद्धाव्रत संस्थापक इस पत्र का वह एक मात्र अवलम्बन है और इसे श्रीहरिभक्ति विलास ग्रन्थ की न्यूनता का पूरक भी मानता हैं, किन्तु इस ग्रन्थ में श्रीनारायणभट्ट कृत साधन दीपिका श्रीगोपालभट्टकृत श्रीहरिभक्ति विलास श्रीसनातन गोस्वामीजी कृत श्रीहरिभक्ति विलास की टीका का विरुद्ध सिद्धान्त ही प्रतिपादित्त हैं। अर्थात् समस्त तिथियों मे पूर्व विद्धा ग्राह्या का ही आवेश है।
२—"विद्धा होने पर भी व्रत होगा" यह उक्ति अत्यन्त साहस पूर्ण है, धर्माचरण, धर्मशास्त्र के अनुसार ही होता है, और इसके प्रणेता दूरदर्शी धार्मिक पण्डित ही होते हैं, इनके कथनानुसार ही समस्त अनुयायियों को चलना गुण होता है, विधान के बिना कुछ भी करना मनमानी है, और यह अकाण्डताण्डव शब्द में पर्यवसित होता है, विद्धाव्रत अकरण में समस्त आचार्य एकमत हैं, अतएव इस प्रकार उक्ति प्रमाद पूर्ण हैं।
३—श्रीमद् रूप, सनातन, गोपालभट्ट, रघुनाथभट्ट, रघुनाथदास,

श्रीजीव गोस्वामी चरणानुमत वैष्णव स्मृति सम्मत।

शब्द शक्ति के साथ परिचय जिनके हैं वे सभी जानते हैं, शब्द अर्थ पूर्ण होते हैं, और इसका ठीक-ठीक अनुसन्धान करके कार्य करना ही उचित है, "अनुमत" शब्द का अनुज्ञात, आदिष्ट, अनुमोदित, स्वीकृत, सम्मत, अभीष्ट, प्रिय, प्रधानत: यह सब अर्थ होते हैं, इन सब अर्थ पूर्ण विशेषण के साथ बिद्धाव्रत विधायक वचन का सम्बन्ध क्या हो सकता है ? सुधीगण इसको अवश्य ही विचार पूर्वक देखेंगे, अपना भ्रम को उक्त अप्रमादी व्यक्तियों के ऊपर थोपने का ही प्रयास इससे प्रकट होता है, यह कृत्य अत्यन्त निन्दनीय है, क्योंकि उपरोक्त व्यक्तियों ने उक्त विद्धाव्रत का विधान कहीं भी नहीं किया है।

४—श्रीहरिभक्ति विलासादि सम्मत यहाँ पर आदि शब्द का आविर्भाव सबसे पहले ही हुआ है, इसको 'अनर्पितचरी' आख्या से विभूषित किया जा सकता है। गोस्वामिमत विधायक शास्त्र श्रीहरिभक्ति विलास को छोड़कर अपर कोई स्मृति ग्रन्थ, इन सबों के अनुगत है यह कोई भी नहीं जानते, विद्धाव्रत विधायक बचन तो उक्त आचार्यों के सिद्धान्त विरुद्ध ही है।

आदि शब्द से श्रीप्रह्लाद संहिता को ग्रहण कराया गया है, उक्त विद्धाव्रत विधायक बचन युक्त प्रह्लाद सहिता को आप सब जानते भी नहीं थे, क्योंकि श्रीहरिभक्ति विलास ग्रन्थ के मूल तथा टीका में कहीं भी इस बचन का उल्लेख नहीं है।

बात रही ब्रजोत्सव चन्द्रिका धृत श्रीप्रह्लाद संहिता बचन की, उक्त ग्रन्थ के साथ उक्त आचार्यों का कुछ भी सम्पर्क नहीं है, अनुमत शब्द का प्रयोग कैसे हुआ ?

विद्धाव्रत प्रवर्त्तक यह व्रत पत्र श्रीनारायणभट्टजी के आनुगत्य को प्रकट करता है, किन्तु स्वयं श्रीनारायणभट्टजी भी उक्त संहिता बचन को नहीं जानते थे, अन्यथा साधन दीपिकोक्त श्रीनृसिंह चतुर्दशी प्रकरण में अवश्य ही इसे लिखते। साधन दीपिका में विद्धाव्रत का निषेध पूर्णतया ही आपने किया है।

अतएव यह सब अत्यन्त भ्रमपूर्व व्यवहार है, भविष्य में ऐसा

भ्रमात्मक आचरण कभी भी न हो, इसके प्रति दृष्टि रखना पत्र के लिए एकान्त कर्त्तव्य होगा।

दूसरी बात पत्र की यह है—पत्र में लिखित है "दिल्लीर श्रीविश्व विजय पञ्जिका हइते तिथिमान गृहीत हइयाछे" पत्र इस वाक्य का निर्वाह नहीं करता, स्वेच्छावश यह दूसरे पञ्जिका का तिथिमान को लेता है, और अपना स्वीकृत पञ्चाग का तिथिमान स्थल-स्थल में उल्लेख भी नहीं करता, जैसे ३ अक्टूबर १९७६ दशमी का तिथिमान अपर पञ्जिका से लिखा गया है, ४।१०।७६ की एकादशी तिथि पिएमबाक्ची पंचाग की है १५।१०।७६ श्रीराधाकुण्ड स्नान की तिथि भी पि एम नामक वङ्गीय पंचाग की है।

२१-१२-७६ की अमावस्या भी वङ्गीय पंचाग से लिखी गई है, शिक्षाचार के लिए ही पंचाग का नाम लिखा जाता है, किन्तु यह पत्र शिष्टाचार का पालन नहीं करता।

व्रत पालन के सम्बन्ध में इस पत्र की दृष्टिकोण दो प्रकार है, अचानक लिखित व्रत व्यवस्था को बदलकर अन्तिम पृष्ठ में नामांकित व्यक्तियों को वङ्गीय पंचाग के अनुसार व्रत करा देता है, और बाकी जनता पत्र में लिखित व्यवस्था का पालन करती, जैसे ८।४।५७ श्रीराम नवमी व्रत, १२।१२।७५ एकादशी व्रत १३।२।७५ श्रीनित्यानन्द जयन्ती, १२।९।७५ श्रीराधाअष्टमी व्रत, इन सब व्रतों में जनता का व्रत पालन पत्र में लिखित के अनुसार हुआ, और तत्वावधायक वर्ग ने व्रत पालन पत्र में लिखित व्यवस्था के अनुसार नहीं किया, इस प्रकार सरल विश्वासी जनता को धर्म पालन कराने का व्रतरत यह पत्र अपनी उत्कर्ष की पताका को फहराता हुआ दिखाई पड़ता है।

अन्त में परमसुहृद् श्रीप्रभु से प्रार्थना हैं।

दोषाः प्रयान्तु नाशं परहितनिरताभवन्तु लोकाः।

विनीतः

हरिदास शास्त्री

श्रीहरिदासशास्त्रि सम्पादिता ग्रन्थावली

१। वेदान्तदर्शनम् "भागवतभाष्योपेतम्" महर्षि श्रीकृष्णद्वैपायन व्यासदेव प्रणीत, ब्रह्मसूत्रों के अकृत्रिम अर्थस्वरूप श्रीमद्भागवत के पद्यों के द्वारा सूत्रार्थों का समन्वय इसमें मनोरम रूप में विद्यमान है।

२। श्रीनृसिंह चतुर्दशी भक्ताह्लादकारी श्रीनृसिंहदेव की महिमा, व्रतविधानात्मक अपूर्व ग्रन्थ।

३। श्रीसाधनामृतचन्द्रिका गोवर्द्धन निवासी सिद्ध श्रीकृष्णदास बाबा विरचित रागानुगीय वैष्णव पद्धति।

४। श्रीसाधनामृतचन्द्रिका (बङ्गला पयार) गोवर्द्धन निवासी सिद्ध श्रीकृष्णदास बाबा के द्वारा सुललित छन्दोबद्ध ग्रन्थ।

५। श्रीगौरगोविन्दार्चन पद्धति गोवर्द्धन निवासी सिद्ध श्रीकृष्णदास बाबा विरचित सपरिकर श्रीनन्दनन्दन श्रीभानुनन्दिनी के स्वरूप निर्णयात्मक ग्रन्थ

६। श्रीराधाकृष्णार्चन दीपिका श्रीजीवगोस्वामिपादकृत श्रीराधासम्बलित श्रीकृष्ण पूजन प्रतिपादन का सर्वादि ग्रन्थ।

७। श्रीगोविन्दलीलामृतम् (मूल, टीका, अनुवाद सह–१-४सर्ग) "श्रीकृष्णदास कविराज प्रणीतम्" स्वारसिकी उपासना के अनुसार अष्टकालीय लीला स्मरणात्मक प्रमुख ग्रन्थ।

८। श्रीगोविन्दलीलामृतम् ५ सर्ग से ११ सर्ग पर्यन्त (टीका सानुवाद)

९। श्रीगोविन्दलीलामृतम् १२ सर्ग से २३ सर्ग पर्यन्त (टीका सानुवाद)

१०। ऐश्वर्यकादम्बिनी (मूल अनुवाद) श्रीबलदेवविद्याभूषणकृत भागवतीय श्रीकृष्णलीला का क्रमबद्ध ऐश्वर्य मण्डित वर्णन, श्रीवृषभानु महाराज, एवं भानुनन्दिनीका मनोरम वर्णन इसमें है।

११। संकल्प कल्पद्रुम (सटीक, सानुवाद) श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्तिपाद कृत स्वारसिकी उपासना का प्रमुख ग्रन्थ।

१२। चतुःश्लोकी भाष्यम् (सानुवाद) श्रीनिवासाचार्यप्रभुकृत चतःश्लोकी भागवत की स्वारसिकी व्याख्या।

१३। श्रीकृष्णभजनामृत (सानुवाद) श्रीनरहरिसरकार ठक्कुर कृत अपूर्व धर्मीय संविधानात्मक ग्रन्थ।

१४। श्रीप्रेमसम्पुट (मूल, टीका, अनुवादसह) श्रीविश्वनाथचक्रवर्त्ती कृत भागवतीय रास रहस्य वर्णनात्मक हृदयग्राही ग्रन्थ।

१५। भगवद्भक्तिसार समुच्चय (सानुवाद) श्रीलोकानन्दाचार्य प्रणीत भक्तिरहस्य परिवेषकअनुपम ग्रन्थ।

१६। भगवद्भक्ति सार समुच्चय(सानुवाद बङ्गला)श्रीलोकानन्दाचार्य प्रणीत, भक्तिरहस्य प्रकाशक मनोहर ग्रन्थ।

१७। व्रजरीति चिन्तामणि (मूल, टीका, अनुवाद) श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्ति ठक्कुर कृत व्रजसंस्कृति वर्णनात्मक अत्युत्कृष्ट ग्रन्थ।

१८। श्रीगोविन्दवृन्दावनम् (सानुवाद) बृहद् गौतमीय तन्त्रान्तर्गत श्रीराधारहस्य परिवेषक सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ।

१९। श्रीराधारस सुधानिधि(मूल बङ्गला)श्रीप्रबोधानन्द सरस्वतीपाद रचित माधुर्य्य भक्तिमयी श्रीराधा महिमा प्रतिपादक अनुपमेय ग्रन्थ।

२०। श्रीराधारससुधानिधि (वंगला मूल, अनुवाद सह)

२१। श्रीराधारस सुधानिधि (मूल हिन्दी)

२२। श्रीराधारससुधानिधि (हिन्दीमूल, अन्वय अनुवाद सह)

२३। श्रीकृष्णभक्ति रत्नप्रकाश (सानुवाद) श्रीराघवपण्डित रचित श्रीकृष्णभक्ति प्रकाशक अनुपम ग्रन्थ।

२४। हरिभक्तिसार संग्रह (सानुवाद) श्रीपुरुषोत्तमशर्म प्रणीत श्रीभागवतीय क्रमबद्ध भक्ति सिद्धान्त संग्रहात्मक ग्रन्थ।

२५। श्रुतिस्तुति व्याख्या(अन्वय, अनुवाद)श्रीपाद प्रबोधानन्द सरस्वती कृत वेदस्तुति की व्रजलीलात्मक व्याख्या।

२६। श्रीहरेकृष्ण महामन्त्र "अष्टोत्तरशतसंख्यक"

२७। धर्मसंग्रह (सानुवाद) श्रीवेदव्यास कृत धर्मसंग्रह श्रीमद्भागवतीय ७म स्कन्ध के अन्तिम ११, १२, १३, १४, १५ अध्यायों का वर्णन।

२८। श्रीचैतन्य सूक्ति सुधाकर श्रीचैतन्यचरितामृत, तथा श्रीचैतन्य-भागवतीय सूक्तियों का संग्रह।

२९। सनत् कुमार संहिता (सानुवाद) व्रजीय रागानुगा उपासना प्रतिपादक सुप्राचीन ग्रन्थ।

३०। श्रीनामामृत समुद्र श्रीनरहरि चक्रवर्त्ति प्रणीत श्रीमन् महाप्रभु के परिकरों का नामसंग्रह।

३१। रासप्रवन्ध (सानुवाद) श्रीपादप्रवोधानन्द सरस्वती कृत।

३२। दिनचन्द्रिका (सानुवाद) सार्वदेशिक दिनकृत्यपद्धति।

३३। भक्तिसर्वस्व(वङ्गाक्षर में)प्रेमभक्तिचन्द्रिका, प्रार्थना प्रभृति सम्बलित

३४। स्वकीयात्वनिरास परकीयात्वप्रतिपादन श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्तीकृत

३५। श्रीसाधनदीपिका श्रीराधाकृष्णगोस्वामिपाद विरचिता, मन्त्रमयी स्वारसिकी उपासना का समन्वयात्मक ग्रन्थ, इसमें ऐतिहासिक एवं गवेषकों के लिए पर्य्याप्त सामग्री सन्निविष्ट है।

३६। मनःशिक्षा (वंगला) (अष्टोत्तरशत पदावली) प्राचीन कवि श्रील प्रेमानन्द दास विरचित।

३७। श्रीचैतन्यचन्द्रामृतम् श्रीप्रबोधानन्दसरस्वतीपाद रचितम्, भक्ति, भक्त, भगवान्, धाम, उपासना तत्त्वात्मक ग्रन्थ।

३८। श्रीगौराङ्गचन्द्रोदयः महर्षि श्रीकृष्णद्वैपायन व्यास प्रणीत वायुपुराणस्थ शेष काण्ड के चतुर्दश अध्याय।
इसमें श्रीमन्महाप्रभु श्रीकृष्णचैतन्यदेव के सपरिकर आविर्भाव वृत्तान्त— श्रीमद्भागवत के टीकाकार श्रीमद् रामनारायण गोस्वामी कृत टीका सम्बलित है। "अनर्पितचरी" श्लोक व्याख्या—श्रीजीव गोस्वामिपाद कृत।

३९। श्रीब्रह्मसंहिता श्रीचैतन्यदेव द्वारा आनीत चतुर्मुख श्रीब्रह्मा विरचित शताध्याय के अन्तर्गत पञ्चम अध्याय। सशक्तिक परतत्त्व प्रतिपादक ग्रन्थ।

४०। प्रमेयरत्नावली श्रीबलदेव विद्याभूषणकृत श्रीकृष्णदेव सार्वभौम कृत टीकोपेता वेदान्त दर्शन के प्रमेयसमूह का विश्लेषणात्मक ग्रन्थ।

४१। नवरत्न—अनन्य रसिक शिरोमणि श्रीहरिराम व्यास महोदय रचित प्रमेय रत्नावलीवत् निज सम्प्रदाय का वर्णन त्मक ग्रन्थ।

४२। भक्तिचन्द्रिका श्रीलोकानन्दाचार्य प्रणीत, श्रीचैतन्यदेव की सुप्राचीन उपासना पद्धति।

४३। पदावली श्रीरायशेखर रचित, श्रीगोविन्ददासकृत—अष्टकालीय सरस प्राञ्जल पदसमूह का संग्रह (वङ्गाक्षर)

४४। भक्तिचन्द्रिका (वङ्गाक्षर संगृहीत ग्रन्थ। इसमें नित्य पाठ्य प्रयोजनीय विषयों का संग्रह है।

४५। महर्षि श्रीकृष्णद्वैपायन प्रणीत—गर्गसंहितोक्त श्रीबलभद्रसहस्रनाम-स्तोत्रम् (वङ्गाक्षर)

४६। वेदान्तस्यमन्तक विप्रकुलशेखर श्रीराधादामोदर कृत। श्रीचैतन्य सम्प्रदाय सम्मत वेदान्त प्रकरण ग्रन्थ।

४७। तत्त्वसन्दर्भः—श्रीमज्जीवगोस्वामीपाद प्रणीतः, श्रीमद्भागवद् भाष्यरूप षट्सन्दर्भ के अन्तर्गत प्रथम सन्दर्भ। मूल, अनुवाद, तात्पर्य्य, श्रीबलदेवकृत टीका श्रीराधामोहनगोस्वामिकृत टीका, श्रीमज्जीवगोस्वामिकृत सर्वसम्वादिनीसमन्वित

४८। श्रीभक्तिरसामृतशेषः—श्रीजीवगोस्वामि-कृतः, अनुवादसह।

४९। अग्निपुराणीय गायत्री-व्याख्या—श्रीजीवगोस्वामि-कृतः, अनुवादसह